**MPSE 004** 

# SOCIAL AND POLITICAL THOUGHT

# PART -3

### **BOTH HINDI AND ENGLISH**

#### Rabindranath Tagore's Critique of Nationalism:

Rabindranath Tagore, a renowned poet, philosopher, and Nobel laureate, was a vocal critic of nationalism. He believed that excessive nationalism could lead to conflict, intolerance, and a loss of individual freedoms. Tagore's critique of nationalism emphasized the importance of universal human values and the dangers of blind allegiance to the nation-state.

**Key Points:** 

# मुख्य बिंदुः

Excessive Nationalism: Tagore argued that excessive nationalism fosters division and hostility among nations, leading to conflict and war.

अत्यधिक राष्ट्रवाद: टैगोर का तर्क था कि अत्यधिक राष्ट्रवाद राष्ट्रों के बीच विभाजन और शत्रुता को बढ़ावा देता है, जिससे संघर्ष और युद्ध होता है।

Loss of Individual Freedom: He believed that nationalism often suppresses individual freedoms and stifles personal growth by demanding blind loyalty to the nation. व्यक्तिगत स्वतंत्रता का नुकसान: उनका मानना था कि राष्ट्रवाद अक्सर व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं को दबाता है और राष्ट्र के प्रति अंध निष्ठा की मांग करके व्यक्तिगत विकास को रोकता है।

Universal Human Values: Tagore emphasized the importance of universal human values such as compassion, understanding, and cooperation over narrow nationalist sentiments.

वैश्विक मानवीय मूल्य: टैगोर ने संकीर्ण राष्ट्रीय भावनाओं पर करुणा, समझ, और सहयोग जैसे वैश्विक मानवीय मूल्यों के महत्व पर जोर दिया।

Critique of Western Nationalism: Tagore specifically critiqued Western nationalism for its aggressive and materialistic tendencies, which he felt were detrimental to global peace.

पश्चिमी राष्ट्रवाद की आलोचना: टैगोर ने विशेष रूप से पश्चिमी राष्ट्रवाद की आक्रामक और भौतिकवादी प्रवृत्तियों की आलोचना की, जो उनके अनुसार वैश्विक शांति के लिए हानिकारक थीं।

Education and Enlightenment: He believed that education should promote a sense of global citizenship and enlightened thinking, rather than narrow nationalist ideologies.

शिक्षा और प्रबोधन: उनका मानना था कि शिक्षा को वैश्विक नागरिकता और प्रबुद्ध सोच को बढ़ावा देना चाहिए, न कि संकीर्ण राष्ट्रीयवादी विचारधाराओं को।

Tagore's vision was of a world where people are united by their shared humanity rather than divided by nationalistic fervor. He advocated for a broader sense of identity that transcends national borders and embraces global interconnectedness.

टैगोर की दृष्टि ऐसी दुनिया की थी जहां लोग राष्ट्रीय उत्साह से विभाजित होने के बजाय अपनी साझा मानवता से एकजुट होते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय सीमाओं से परे और वैश्विक अंतर्संबंध को अपनाने वाली व्यापक पहचान की वकालत की।

# Sir Syed Ahmed Khan's Views on Hindu-Muslim Unity:

Sir Syed Ahmed Khan, a prominent 19th-century Indian Muslim scholar, educator, and reformer, had a complex and evolving perspective on Hindu-Muslim unity. Initially, he advocated for unity between the two communities but later expressed concerns about their political and social differences.

#### **Key Points:**

# मुख्य बिंदुः

Early Advocacy for Unity: In the early stages of his career, Sir Syed emphasized the importance of Hindu-Muslim unity for India's progress and development.

एकता के लिए प्रारंभिक वकालत: अपने करियर के प्रारंभिक चरणों में, सर सैयद ने भारत की प्रगति और विकास के लिए हिंदू-मुस्लिम एकता के महत्व पर जोर दिया।

Shared Heritage: He highlighted the shared cultural and historical heritage of Hindus and Muslims, believing that cooperation was essential for social harmony.

साझा विरासत: उन्होंने हिंदू और मुस्लिमों की साझा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को उजागर किया, उनका मानना था कि सहयोग सामाजिक सद्भाव के लिए आवश्यक है। Education and Reform: Sir Syed promoted modern education and socio-religious reforms among Muslims, which he believed would bridge the gap between the two communities.

शिक्षा और सुधार: सर सैयद ने मुसलमानों के बीच आधुनिक शिक्षा और सामाजिक-धार्मिक सुधारों को बढ़ावा दिया, उनका मानना था कि इससे दोनों समुदायों के बीच की खाई पाटी जा सकेगी।

Aligarh Movement: Through the Aligarh Movement, he aimed to uplift the Muslim community educationally and socially, fostering a sense of unity and cooperation with Hindus.

अलीगढ़ आंदोलन: अलीगढ़ आंदोलन के माध्यम से, उन्होंने मुस्लिम समुदाय को शैक्षिक और सामाजिक रूप से उत्थान करने का लक्ष्य रखा, हिंदुओं के साथ एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया।

Shift in Perspective: After the 1880s, Sir Syed's views shifted due to political developments and increasing communal tensions. He began to emphasize the distinct political interests of Muslims and Hindus.

दृष्टिकोण में परिवर्तन: 1880 के दशक के बाद, राजनीतिक विकास और बढ़ते साम्प्रदायिक तनाव के कारण सर सैयद के विचार बदल गए। उन्होंने मुसलमानों और हिंदुओं के विशिष्ट राजनीतिक हितों पर जोर देना शुरू किया।

Two-Nation Theory: Although he did not directly advocate for the partition of India, his later views laid the groundwork for the idea that Muslims and Hindus were two distinct nations with separate political interests.

दो-राष्ट्र सिद्धांत: हालांकि उन्होंने सीधे तौर पर भारत के विभाजन की वकालत नहीं की, लेकिन उनके बाद के विचारों ने इस विचार की नींव रखी कि मुसलमान और हिंदू दो अलग-अलग राष्ट्र हैं जिनके अलग-अलग राजनीतिक हित हैं। In summary, Sir Syed Ahmed Khan's views on Hindu-Muslim unity evolved from a strong advocacy of cooperation and shared progress to a more cautious stance that recognized the complexities and distinct political needs of each community.

सारांश में, सर सैयद अहमद खान के हिंदू-मुस्लिम एकता पर विचार सहयोग और साझा प्रगति की मजबूत वकालत से बदलकर अधिक सतर्क रुख में विकसित हुए, जिसने प्रत्येक समुदाय की जटिलताओं और विशिष्ट राजनीतिक आवश्यकताओं को पहचाना।

# Periyar E. V. Ramasamy (Periyar) Naicker's Critique of Hinduism

Periyar E. V. Ramasamy, commonly known as Periyar, was a prominent Indian social activist and politician who criticized Hinduism for its social inequalities and practices. He was the founder of the Self-Respect Movement, which sought to eradicate the caste system and promote social justice.

#### **Key Points:**

# मुख्य बिंदु

Critique of the Caste System: Periyar vehemently opposed the caste system, which he viewed as a tool of oppression used by the upper castes to subjugate lower castes, particularly Dalits.

जाति व्यवस्था की आलोचना: पेरियार ने जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध किया, जिसे उन्होंने निचली जातियों, विशेषकर दलितों को अधीन करने के लिए उच्च जातियों द्वारा इस्तेमाल किए गए उत्पीड़न के उपकरण के रूप में देखा। Religious Superstitions: He criticized Hinduism for promoting superstitions and rituals that, according to him, hindered rational thinking and progress.

धार्मिक अंधविश्वास: उन्होंने हिंदू धर्म की आलोचना की क्योंकि यह अंधविश्वास और अनुष्ठानों को बढ़ावा देता था, जो उनके अनुसार, तार्किक सोच और प्रगति में बाधा डालते थे।

Gender Inequality: Periyar condemned the patriarchal nature of Hinduism, which he believed perpetuated gender inequality and the subjugation of women.

लिंग असमानता: पेरियार ने हिंदू धर्म के पितृसत्तात्मक स्वभाव की निंदा की, जिससे उनके अनुसार, लिंग असमानता और महिलाओं के अधीनता को बढ़ावा मिलता था।

Brahminical Dominance: He argued that Hinduism, as practiced, was dominated by Brahmins, who used religion to maintain their social and economic supremacy.

ब्राह्मणिक प्रभुत्व: उन्होंने तर्क दिया कि हिंदू धर्म, जैसा कि प्रचलित था, ब्राह्मणों के प्रभुत्व में था, जिन्होंने अपने सामाजिक और आर्थिक वर्चस्व को बनाए रखने के लिए धर्म का उपयोग किया।

Advocacy for Rationalism: Periyar promoted rationalism and atheism, encouraging people to question religious doctrines and practices that lacked scientific basis.

तर्कवाद के लिए वकालत: पेरियार ने तर्कवाद और नास्तिकता को बढ़ावा दिया, लोगों को उन धार्मिक सिद्धांतों और प्रथाओं पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिनमें वैज्ञानिक आधार की कमी थी। Social Reforms: He was a strong advocate for social reforms, including the abolition of untouchability, promoting education among the oppressed classes, and advocating for women's rights.

सामाजिक सुधार: उन्होंने सामाजिक सुधारों के लिए मजबूत वकालत की, जिसमें अस्पृश्यता का उन्मूलन, उत्पीड़ित वर्गों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देना, और महिलाओं के अधिकारों के लिए वकालत करना शामिल था।

